Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 04, December 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

चम्बा की 'मुसाधा' तथा 'ऐंचली' पांरपरिक गायन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

MANU DEVI[1] & PROF. R.S. SHANDIL[2]

[1] Research Scholar, Department of Music, HPU, Shimla
[2] Professor, Department of Music, HPU, Shimla

सार संक्षेपिका

भक्ति भाव से ओत्त-प्रोत 'मुसाधा' तथा 'ऐंचली' चम्बा की लोकप्रिय गायन शैलियों में से एक है। स्थानीय बोली में 'मुसाधा' का अर्थ है - मुंह का स्वाद अर्थात् ऐसे गीत जिन्हें गाने मात्र से मुंह में स्वाद आए। इसी प्रकार 'ऐंचली' को स्थानीय बोली में 'आंचलिक गीत' कहा जाता है अर्थात् ऐसे गीत जो आंचल में पले-बढ़े हो। ये दोनों गायन शैलियां धार्मिक होते हुए भी एक दूसरे से काफी भिन्न हैं। इनकी विषयवस्तु से लेकर गायन तकनीक, वादय् वादन तथा ताल आदि में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। दोनों के गायक कलाकारों, गायन स्थान व गायन समय में भी विशेष अंतर पाया जाता है। 'मुसाधा' गायन शैली में गायी जाने वाली गाथाएं अधिकतर भगवान विष्णु तथा भगवान कृष्ण को समर्पित होती हैं। जबकि 'ऐंचली' में गायी जाने वाली गाथाएँ शिव को समर्पित होती हैं। इसमें अन्य गाथाएँ भी गायी जाती हैं किन्तु प्रधानता 'शिव गाथा की ही रहती है। चम्बा में इन पारंपरिक गायन शैलियों की लोकप्रियता आज भी कायम है। यद्यपि संकोचवश अथवा कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते युवा पीढ़ी का इन गायन शैलियों को गाने के प्रति रुझान कम दिखाई देता है किन्तु पुराने कलाकार आज भी इनका गायन वादन करने में गर्वान्वित महसूस करते हैं।

शोध क्षेत्र 'मुसाधा' तथा 'ऐंचली' के तुलनात्मक अध्ययन पर केन्द्रित रहा।

शोध विधि- इस शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण- शोध कार्य के लिए प्रश्नावलि तथा व्यक्तिगत साक्षात्कारों का प्रयोग किया गया है।

बीज शब्द - 'मसुाधा', 'ऐंचली' 'नुआला'

भूमिका

हिमाचल प्रदेश का ज़िला चम्बा अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए विश्वभर में जाना जाता है। यह गगनचुम्भी पर्वत शृखंलाओं,, हिमच्छादित पहाड़ियों व ढलानदार नदी घाटियों का स्थल है। चम्बा अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ अपनी लोक संस्कृति की दृष्टि से भी सम्पन्न ज़िला माना जाता है।[1] ''संस्कृति को कला, साहित्य, दर्शन आदि की सामूहिक संज्ञा माना जाता है।'' इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि मनुष्य जो आचार-विचार, परंपराएं, रीति-रिवाज, कर्म-काण्ड आदि पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने पूर्वजों से सीखता है वे उसकी संस्कृति कहलाती है। इसी आधार पर हम लोक संस्कृति को इस प्रकार परिभाषित कर सकते है- लोक संस्कृति असंस्कृत लोगों की वे परंपराएं, रीति-रिवाज, साहित्य, कला दर्शन आदि है जिनकी शिक्षा अमूक लोगों ने किसी विद्यालय में नहीं ली बल्कि मौखिक रूप से गांव के खुले वातावरण में सीखा और उन्हें अपने पूर्वजो की विरासत समझ कर संजो कर रखा। चम्बा की लोक संस्कृति का स्पष्ट रूप यहां की पारंपरिक लोक गायन शैलियों में देखने को मिलता है। ये गायन शैलियां ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक तथा बहुत विशेष 'ऐंचली' अपना एक विशेष स्थान रखती हैं।

1 राजश्री, सांस्कृतिक शिक्षा के उद्विकास में संगीत का योगदान पृ॰ सं॰- 1

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 04, December 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

'मुसाधा'- 'मुसाधा' का शाब्दिक अर्थ है मुंह का स्वाद अर्थात् जिसे गाकर मुंह में स्वाद आए, आनंद की प्राप्ति हो। 'मुसाधा' के विषय में चम्बा में यह मान्यता है कि यह गायन शैली भगवान श्री कृष्ण के द्वारा सृजी गई थी। श्री कृष्ण ने इसे सुदामा को दिया। सुदामा भीक्षा मांगते समय इस गायन शैली का गायन वादन करते थे। सुदामा से ये गायन शैली आम जन मानस में आई। इसे गाने वाले दो कलाकार स्त्री-पुरूष दंपति होते हैं। पुरुष कलाकार को 'धुराई' और स्त्री कलाकार को 'धुरैण' कहते है। यह नृत्य निषेध गायन शैली है। माघ महीने में चम्बा के लोग मुसाधा गायकों को अपने घरों में गायन-वादन करने के लिए आमंत्रित करते हैं। ये कलाकार अपनी पारंपरिक वेशभूषा पहन कर सारी रात 'मुसाधा' गायन करते हैं। यह गायन शाम को ही शुरू हो जाता हैं और सुबह तक चलता है। इसे गाते समय 'धुराई' (पुरूष कलाकार) एक हाथ से गले में डाला हुआ तंत्री वाद्य 'रुबाना' तथा दूसरे हाथ से ताल वाद्य खंजरी बजाता है। 'घुरैण' (स्त्री कलाकार) कणसी बजाते हुए गायन करती है। यह अनोखा दृश्य विश्वभर में शायद ही कहीं देखने को मिले। 'मुसाधा' में भगवान कृष्ण, भगवान विष्णु, रामायण अथवा महाभारत से सम्बन्धित गाथाएं गायी जाती हैं। 'मुसाधा' गाने से पूर्व यजमान खंजरी मे अन्न के दाने भरता है जिसे स्थानीय बोली में 'खंजरी भरना' कहते हैं। वाद्य यंत्रों की पूजा भी की जाती है। इसके बाद गायन शुरु होता है। मुसाधा में 'धुराई' गीत की दो पंक्तियों को गाकर स्थानीय भाषा में श्रोताओं को उनका अर्थ समझता है। 'मुसाधा' के साथ नृत्य करना वर्जित होता है। 'मुसाधा' का आयोजन पुत्र प्राप्ति होन पर अथवा कोई अन्य मन्नन पूरी होने पर किया जाता है। इन गीतों के साथ आठ मत्रिक 'कहरवा' अथवा चैदह मात्रिक 'दीपचंदी' ताल के प्रकार बजाए जाते हैं। सर्वप्रथम यह गायन शैली 'सिप्पी' जाति के लोगों के द्वारा गायी जाती थी और यह परंपरा आज भी प्रचलित है किन्तु आधुनिक समय में अन्य जातियाँ गद्दी, हाली आदि भी इसका गायन करने लगीं हैं। 'मुसाधा' गाने वाले कलाकार को यजमान श्रद्धानुसार अन्न, धन भेंट करता है। इसके लिए कलाकार स्वयं किसी प्रकार की कोई मांग नहीं करते। वह इन गीतों को भगवान को समर्पित करते हुए गाते हैं न कि किसी प्रलोभन में आकर गाते हैं। इस गायन शैली का एक सर्वप्रचलित गीत इस प्रकार है-

''जन्म जे लेया मेरे पृथ्वी राजे, पाली लेया माता जसोदै

मेरे रामा पाली लेया माता जसौदे हां ....

सर्वा लक्ष्मीयै माता जसोदै तेरे घरै आए भगवान

मेरे रामा देणी भिंजो जसौदे तेरे घरै आए भगवान

उपर्युक्त गीत, कृष्ण लीला से सम्बन्धित संध्याकालीन गीत है। इसलिए इसे 'संजड़ी गीत कहा जाता है। गीत में कृष्ण की मधुर बासुंरी का वर्णन किया गया है कि शाम होते ही जैसे ही भगवान कृष्ण बांसुरी बजाना शुरु करते हैं वैसे ही मनुष्यों से लेकर पशु-पक्षियों तक सब जीव बांसुरी की धुन में मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। वे अपना खाना-पीना तक भूल जाते हैं।[1]

गीत की स्वरलिपि

इस गीत में दीपचंदी ताल के प्रकार की ताल बजाई जाती है।

1 रोशन लाल, गांव सांवरा (भरमौर) द्वारा प्राप्त जानकारी।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 04, December 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
प	-	-	नि॒	सा	रे	रे	रे	म	गरे	सा	-	रेसा	नि॒प॒
जन्	म	जे	ले	या	मे	रे	पृ	थ्	वीऽ	रा	ऽ	जेऽ	ऽऽ
रे	गम	गरे	सा	-	गरे	सनि॒	नि॒	-	प॒	नि॒	सा	रे	म
पा	ली॒	लिया	मा	ऽ	ताऽ	जऽ	सो	ऽ	दै	मे	रे	रा	मा
म	म	गरे	सा	-	गरे	सनि॒	सा	गरे	सनि॒	सा	-	-	-
पा	ली	लिया	मा	ऽ	ताऽ	जऽ	सो	ऽऽ	दैऽ	हों	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की शेष पंक्तियां भी इसी धुन में गाई जाती है।

'ऐंचली'

'ऐंचली' चम्बा के धार्मिक अनुष्ठान 'नुआला' में गायी जाने वाली गायन शैली है। स्थानीय बोली में ऐंचली को 'आंचलिक गीत' कहा जाता है। अर्थात् ऐसे गीत जो गांव के आंचल में पले-बढ़े होते हैं। ऐंचली में सृष्टि उत्पति, सरवन कथा, रामीण, पाण्डवीण जैसी धार्मिक गाथाएं हैं किन्तु इसमें प्रधानता शिवस्तुति परक गाथाओं की रहती है। क्योंकि 'नुआला' शिव पूजन अनुष्ठान है अतः इसमें गायी जाने वाली गाथाएं भी शिव को समर्पित होती हैं। विद्वानों के अनुसार 'नुआला' अनुष्ठान को राजा साहिल वर्मन के गुरू एवं नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक 'चरपट नाथ' ने शुरू किया था। चम्बा के लोग शिव को अपना आराध्य देव मानते हैं। इसी कारण नुआला चम्बा के प्रत्येक घर में करवाया जाता है। इस अनुष्ठान को वर्ष मे कभी भी करवा सकते हैं। किन्तु इसका शुभ समय 'शिवरात्रि' अथवा श्रावण का पूरा महीना माना जाता है। इसका आयोजन भी पुत्र प्राप्ति होने पर, नए घर में प्रवेश करने पर, कोई मन्नत पूरी होने अथवा विवाह जैसे शुभ अवसर पर किया जाता है। 'नुआला' में शिव को ऊन अर्पित की जाती है तथा मेढ़े की बलि देने की प्रथा भी है। यह अनुष्ठान मंदिर अथवा यजमान के घर में आयोजित किया जाता है। इसके आयोजन हेतु पूजा स्थल (मंडप) को गोबर से लीप कर विशेष रीति से सजाया जाता है। इसमें 'ऐंचली' गाने वाले चार मुख्य गायक कलाकार होते हैं। जिन्हें स्थानीय भाषा में 'बंदे' कहा जाता है। ये कलाकार ढोल, नगाड़ा, कणसी, थाली-घड़ा जैसे लोक वाद्यों के साथ पूरी रात गायन करते है। इन वाद्यों के बजते ही श्रोताओं के पांव स्वतः ही नृत्य के लिए थिरकने लगते है। आरंभ में यह गायन शैली गद्दी जनजाति के द्वारा गायी जाती थी किन्तु वर्तमान में अन्य जातियां भी इसका गायन-वादन करने लगी हैं। 'ऐंचली' 'ऐंचलयाड़ों' की आस्था से जुड़ी हुई गायन शैली है। अतः वे इसे गाने के बदले यजमान से किसी भी प्रकार की कोई मांग नहीं करते किन्तु यजमान श्रद्धाभाव से इन कलाकारों की अन्न के दाने व धन भेंट स्वरूप दे देता है। 'ऐंचली' का एक गीत इस प्रकार है-

''भोलेया वो सामीया

बत्ती के कोठै तेरा मंडल लिखें

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 04, December 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

ले वो सामी अपणै उधारो

भोलेया व सामीया ....

यह गीत 'घट स्थापना' (पूजा स्थल की सजावट) से सम्बन्धित है। पूजा स्थल तैयार हो जाने के पश्चात् 'ऐंचली' के माध्यम से शिव से आग्रह किया जाता है कि हे प्रभु! इसमें लगी हुई सामग्री को आप ग्रहण करें''।[1]

इस गीत में दीपचंदी के प्रकार की ताल बजाई जाती है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
										सा	-	-	रे
										भो	ऽ	लै	ऽ
ग	प	प	मग	-	रे	-	सा	-	-	-	-	-	-
या	वो	ऽ	सा	ऽ	मी	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	-	-	ग	-	-	-	ग	रे	-	ग	प	प	ग
ब	ती	ऽ	वो	ऽ	को	ऽ	ठै	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रा	ऽ
ग	-	-	रे	-	रेग	रे	सा	-	-	-	-	-	-
म	ड	ऽ	ल	ऽ	लि	ऽ	खै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रेग	-	गग	रे	सा	-	सा	-	नि़प़	सा	-	रेग	-
लै	वोऽ	ऽ	सा	ऽ	मी	ऽ	अ	प	ऽ	णै	ऽ	उ	ऽ
ग	-	-	मग	रे	-	-	-	-	-				
धा	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

'मुसाधा' तथा 'ऐंचली' की तुलना

आज यदि चम्बा की संस्कृति का वर्चस्व विश्वभर में कायम है तो निःसदेह इसका श्रेय उन कलाकारों को जाता है जिन्होंने आज भी अपनी संस्कृति को जीवन्त रखा है। वर्तमान मे पर्याप्त आधुनिक उपकरण उपलब्ध होने पर भी 'मुसाधा' तथा 'ऐंचली' जैसी गायन शैलियों की लोकप्रियता में कमी नहीं आई है। रात भर गायी जाने वाली ये दोनों गायन शैलियाँ धार्मिक होते हुए भी परस्पर भिन्न हैं।

1 कंचन देवी, गांव सावंरा (भरमौर) द्वारा प्राप्त जानकारी।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 04, December 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

''मुसाधा'' गाने वाले दो कलाकार स्त्री-पुरूष दंपति होते हैं। जबकि 'ऐंचली' चार कलाकारों (बंदों) द्वारा सम्पन्न की जाती है। 'मुसाधा' में भगवान श्रीकृष्ण, विष्णु, राम से सम्बंधित गाथाएं गायी जाती हैं किन्तु 'ऐंचली' की मूल विषयवस्तु शिव स्तुति परक गाथाएं होती हैं। 'मुसाधा' का पूजा-स्थल साधारण होता है जबकि 'ऐंचली' गाने के लिए 'नुआले' के मंडल को एक विशेष रीति से सजाया जाता है। 'मुसाधा' में किसी तरह की बलि का कोई प्रावधान नहीं है लेकिन 'नुआल़ें' में मेढें की बलि दी जाती है। 'मुसाधा' नृत्य निषेध गायन शैली है जबकि 'ऐंचली' नृत्य के अभाव में नीरस है, निष्प्राण है। 'मुसाधा' में 'रुबाना' तथा 'खंजरी' वाद्यों का वादन किया जाता है। 'ऐंचली' में ढोल, नगाड़ा, थाली-घडा़ तथा कणसी जैसे लोक-वाद्यों का वादन किया जाता है। 'ऐंचली' केवल पुरुष कलाकारों के द्वारा ही गायी जाती है। इन दोनों गायन-शैलियों में समानता होने पर भी परस्पर काफी भिन्नता पाई जाती है। दोनों की अपनी महत्ता है, अपनी विशेषताएं हैं। अतः हम इन दोनों में से किसी को भी एक दूसरे से कम नहीं आंक सकते।[1]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते हैं कि 'मुसाधा' तथा 'ऐंचली' चम्बा की लोकप्रिय गायन शैलियों में से एक हैं। जिस प्रकार पुरानी पीढ़ी के लोगों ने इन गायन शैलियों को आज तक सुरक्षित व संरक्षित रखा है उसी प्रकार नई पीढ़ी का भी यह दायित्व बनता है कि वह भी अपने पूर्वजों की इस विरासत को संजोकर रखे। ताकि आने वाली पीढ़ियां अपनी संस्कृति को जानने से वंचित न रहें।

संदर्भ

1. शर्मा, डा॰ गौतम कथित, कांगड़ा के लोक गीत, साहित्यक विश्लेषण एवं मूल्यांकन, जयश्री प्रकाशन दिल्ली।
2. राजश्री, सांस्कृतिक शिक्षा के उद्विकास में संगीत का योगदान, राधा पब्लिकेशन दिल्ली।

साक्षात्कार

1. रोशन लाल, गांव सांवरा, डाकघर उरेही, तहसील भरमौर, चम्बा (हि॰ प्र॰)
2. कंचन देवी, गांव सांवरा, डाकघर उरेही, तहसील भरमौर, चम्बा (हि॰ प्र॰)
3. चमन लाल, गांव रैण्ड, डाकघर रायपुर, तहसील भट्टियात् जिला चम्बा (हि॰ प्र॰)

1 चमन लाल, गांव रैण्ड (भट्यिात्) द्वारा प्राप्त जानकारी